

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मानवता और पाप, सत्र 7, ईश्वर की छवि, रॉबर्ट सी. न्यूमैन, संश्लेषण, मानवता का संविधान

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 7 है, ईश्वर की छवि। रॉबर्ट सी. न्यूमैन, संश्लेषण, मानवता का संविधान।

आइए हम प्रार्थना करें। दयालु पिता, हम आपके वचन के लिए आपका धन्यवाद करते हैं, जो हमें सिखाता है कि आपने हमें ईश्वर की छवि में बनाकर कुछ महत्वपूर्ण तरीकों से खुद की तरह बनाया है। हमें समझ और अंतर्दृष्टि प्रदान करें, और अपनी कृपा से हममें काम करें ताकि हम अपनी दुनिया, जीवन और रिश्तों में आपकी बेहतर छवि बना सकें। हम अपने प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से प्रार्थना करते हैं। आमीन।

हम रॉबर्ट सी. न्यूमैन के काम पर आते हैं। यह एक रचनात्मक प्रस्ताव है।

मैंने इसे कहीं और नहीं देखा है। ऐसा लगता है कि यह वास्तव में मदद करता है, खासकर छवि के संबंधपरक पहलुओं के साथ। डॉ. रॉबर्ट सी. न्यूमैन ने मानव जाति में ईश्वर की छवि के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

उनका निबंध, बाइबिल धर्मशास्त्र से मनुष्य में ईश्वर की छवि पर कुछ दृष्टिकोण, आईबीआरआई अनुसंधान रिपोर्ट संख्या 21, 1984, हमें इस विषय पर बाइबिल की शिक्षा के साथ न्याय करने में मदद करता है। न्यूमैन ने अपनी थीसिस का सारांश देते हुए कहा, "मनुष्य को ईश्वर की छवि में देखने का एक बहुत ही उपयोगी तरीका उन चित्रों पर विचार करना है जो ईश्वर स्वयं के बारे में देता है, जो अन्य लोगों या निर्मित पर्यावरण के अन्य भागों के साथ उसके संबंधों में मनुष्य को दर्शाते हैं। हम ईश्वर की छवि में पुरुष और महिला के बारे में उन चित्रों पर विचार करके सीखते हैं जो ईश्वर स्वयं के बारे में देता है, जो मानवीय संबंधों को दर्शाते हैं।"

यहाँ इनमें से कुछ का सारांश दिया गया है। सबसे पहले, अवलोकन। निर्जीव, पौधों, जानवरों, मानव समाज, परिवार के साथ मनुष्य का संबंध।

मनुष्य का निर्जीव से सम्बन्ध। कुम्हार और मिट्टी। ईश्वर सृष्टिकर्ता है, महान कुम्हार है।

मनुष्य, जो कि उसका प्राणी है, मिट्टी के बर्तनों के साथ काम करते समय परमेश्वर का प्रतिरूप है। यशायाह 64:8. यशायाह 29:15, और 16. यशायाह 45:9. मनुष्य मिट्टी से बर्तन बनाने में सक्षम है।

इस तरह, मानव रचनात्मकता ईश्वर के महान सृजन कार्य का एक चित्र है। तथ्य यह है कि हमारे पास रचनात्मकता है, इस तथ्य के कारण है कि कुम्हार, बड़े अक्षर P ने हमें इस संबंध में खुद की तरह बनाया। रचनात्मकता के इस विचार से संबंधित उद्देश्य या डिजाइन है।

कुम्हार अपने मन में एक बर्तन की कल्पना करता है और फिर उसे अस्तित्व में लाता है। वह अपनी योजनाओं के अनुसार उसे आकार देता है। इसलिए, महान कुम्हार परमेश्वर योजना बनाता है और अपने उद्देश्यों को पूरा करता है।

रोमियों 9:19-24. मनुष्य में परमेश्वर की छवि की इस तस्वीर का दूसरा पहलू संप्रभुता का है। कुम्हार अपनी मिट्टी पर वास्तविक नियंत्रण रखता है।

वह इसके साथ जैसा चाहे वैसा कर सकता है। तो, उद्धरण, भगवान, क्षमा करें, यह भगवान के समान कोई उद्धरण नहीं है। कुम्हार और मिट्टी का चित्र सिखाता है कि मनुष्य में भगवान की छवि में रचनात्मकता, योजना और संप्रभुता शामिल है।

एक बार फिर, परमेश्वर अपने बारे में ऐसे तरीके से बात करता है जो अलग-अलग चीजों के साथ इंसानों के रिश्ते के अनुरूप हैं। और इस तरह, हम परमेश्वर की छवि बनाते हैं। पौधों, माली या किसान और पौधों के संबंध में परमेश्वर।

उद्धरण, न्यूमैन को उद्धृत करते हुए, किसान अपने पेड़ों की देखभाल करता है ताकि वे स्वस्थ रहें ताकि वे वह फल दें जिसके लिए उन्हें लगाया गया है। इसी तरह, भगवान के पास हमारे जीवन के लिए एक उद्देश्य है, जिसे अक्सर फल देने के संदर्भ में संदर्भित किया जाता है। यह सब न्यूमैन के पैम्फलेट के पेज पांच से था।

यहाँ, मनुष्य पौधों की देखभाल करने और अपनी योजनाओं को क्रियान्वित करने में परमेश्वर की नकल करता है। किसान अच्छे और बिकार पौधों के साथ अलग-अलग तरीके से पेश आता है, जो धर्म और दुष्टों के प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रियाओं को दर्शाता है। यूहन्ना 15:1-9.

यहेजकेल 15:1-18. मत्ती 3:8, और 10. इस चित्र के ज़रिए व्यक्त की गई परमेश्वर की छवि में देखभाल, योजना बनाना, आशीर्वाद देना और न्याय करना शामिल है।

मनुष्य का जानवरों, चरवाहे और भेड़ों से संबंध। चरवाहा जाता है और खोई हुई भेड़ों को ढूँढ़ता है, जैसे परमेश्वर हमें ढूँढ़ता है। यशायाह 53:6. लूका 15:4-7.

जैसे चरवाहा झुंड की अगुआई करता है, वैसे ही परमेश्वर अपने लोगों की अगुआई करता है। भजन 23: 2-3. भजन 80, पद 1. " जैसे चरवाहा अपनी भेड़ों को चरागाह ढूँढ़कर खिलाता है, वैसे ही परमेश्वर हमें शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों तरह से पोषण प्रदान करता है।" भजन 23:1-2. यहेजकेल 34:12-15.

न्यूमैन पैम्फलेट का छठा पृष्ठ। जैसे चरवाहा भेड़ों को उनके शत्रुओं से बचाता है, वैसे ही परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा करता है। यिर्मयाह 50:5-10, 18-19 . यहेजकेल 34:12-16. भजन संहिता

23:4. यूहन्ना 10:11-18.

जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है, वैसे ही परमेश्वर अंतिम दिन धर्मी और दुष्टों के बीच न्याय करेगा। मत्ती 25:32-33. मनुष्य अपने लोगों की खोज करने, उनका मार्गदर्शन करने, उन्हें खिलाने और उनकी रक्षा करने की गतिविधियों में परमेश्वर की नकल करता है। मनुष्य, जो भेड़ों को बकरियों से अलग करता है, परमेश्वर को एक न्यायाधीश के रूप में चित्रित करता है।

मनुष्य का मानव समाज, राजा और प्रजा से संबंध। जिस तरह सांसारिक राजा सम्मान के हकदार हैं, उसी तरह स्वर्गीय राजा परमेश्वर भी सम्मान के हकदार हैं? मलाकी 1:14. जैसे राजा अपनी प्रजा पर शासन करता है, वैसे ही परमेश्वर भी करता है।

भजन संहिता 29:1-11. 1 तीमुथियुस 6-15. “जैसे राजा धर्मियों की रक्षा करता है और दुष्टों को दण्ड देता है, वैसे ही परमेश्वर भी करता है।” लूका 19:11-27. मत्ती 22:1-14. पुस्तिका का आठवाँ पृष्ठ।

इस तस्वीर के अनुसार, मनुष्य परमेश्वर के समान है, क्योंकि वह शासन करने, आशीर्वाद देने और न्याय करने के मामले में सम्मान के योग्य है। परिवार, माता-पिता, बच्चे, पति, पत्नी के संबंध में मनुष्य। माता-पिता बच्चों को जन्म देते हैं या गोद लेते हैं। परमेश्वर दोनों करता है। यूहन्ना 1:12-13. 1 पतरस 1:3.

गलातियों 4: 4-7. रोमियों 8:14-19. जैसे बच्चों को अपने अच्छे व्यवहार से अपने माता-पिता के लिए एक श्रेय बनना चाहिए, वैसे ही विश्वासियों को अपने पिता, परमेश्वर के प्रति पारिवारिक समानता दिखानी चाहिए। 1 यूहन्ना 3:1-10. मत्ती 5:43-48. यूहन्ना 8:36-47.

परमेश्वर अपने बच्चों की देखभाल एक अच्छे पिता की तरह करता है। मत्ती 7:7-11. इब्रानियों 12:5-11.

लूका 15:11-32. हम अपने बच्चों को जन्म देकर, ईश्वरीय पारिवारिक समानता दिखाकर, और अपने बच्चों की देखभाल करके ईश्वर को प्रतिबिम्बित करते हैं। पति और पत्नी का रिश्ता ईश्वर और उसके लोगों के बीच के गतिशील रिश्ते को प्रतिबिम्बित करता है।

विवाह की वाचा परमेश्वर और उसके अपने लोगों के बीच के बंधन को दर्शाती है। पत्नी का अपने पति के प्रति बंधन परमेश्वर के प्रति हमारी आज्ञाकारिता को दर्शाता है। इफिसियों 5:24.

दम्पति का आनन्द परमेश्वर के अपने लोगों के प्रति आनन्द को दर्शाता है। भजन संहिता 45:11 और 15. यशायाह 62:5. पति का अपनी पत्नी के प्रति प्रेम परमेश्वर के प्रेम को दर्शाता है, मसीह का कलीसिया के प्रति प्रेम को दर्शाता है।

इफिसियों 5:25. पति-पत्नी का रिश्ता स्पष्ट रूप से परमेश्वर और उसके अपने लोगों के बीच की अंतरंगता को दर्शाता है। इस प्रकार यह चित्र मनुष्य में परमेश्वर की छवि की ओर इशारा करता है जिसमें परमेश्वर अपने लोगों के साथ वाचा में प्रवेश करता है।

ईश्वर का अधिकार, उसका आनंद, उसका प्रेम, तथा उसके और उसके प्रियतम के बीच एकता की अंतरंगता। इसका एक दिलचस्प परिणाम यह है कि हमारे, इन विभिन्न रिश्तों में से कुछ में, एक सीमित, प्राणीगत तरीके से, सभी मनुष्य थोड़ा-बहुत जानते हैं कि ईश्वर होना कैसा होता है। ईश्वर के लिए ईश्वर होना कैसा होता है।

यह एक उल्लेखनीय बात है। जब हम अपने बच्चों के माता-पिता होने के बारे में सोचते हैं, तो यह सोचना वास्तव में एक बहुत ही दृढ़ विश्वास वाली बात है कि भगवान किस तरह से हमारे माता-पिता हैं और हम अपने बच्चों के माता-पिता कैसे हैं, भले ही हम उनसे प्यार करते हों और कुल मिलाकर अच्छा करते हों। यह बहुत ही विनम्र और यहां तक कि दृढ़ विश्वास वाली बात है कि इसकी तुलना भगवान से करें, जिस तरह से वह कृपापूर्वक, दयालुता से, कभी-कभी सख्ती से, लेकिन हमेशा हमारे भले के लिए, हमें अपने बच्चों के रूप में पालते हैं।

एक व्यवस्थित संश्लेषण। हमने ईश्वर की छवि के सिद्धांत पर काम किया है। हमने इसके कई पहलुओं का अध्ययन किया है।

अब समय आ गया है कि हम सब कुछ एक साथ लाएँ, और मुझे लगता है कि मनुष्य में ईश्वर की छवि पर बाइबल की शिक्षाओं को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए कम से कम पाँच दृष्टिकोण सहायक हैं। अवलोकन। छवि के मूल, कार्यात्मक और संबंधपरक पहलू हैं।

दो. यीशु मसीह परमेश्वर की आदर्श छवि है। तीन.

हमें छवि के मुक्ति-ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखना होगा। छवि का निर्माण, पतन, मुक्ति और पूर्णता के रूप में। चौथा।

हमें यह देखने की ज़रूरत है कि छवि में ईश्वर, साथी मानव और ईश्वर की सृष्टि के साथ उनके संबंधों में मानव शामिल है। पाँचवाँ। मानव मुक्ति प्राप्त मानवता का कुल योग छवि से संबंधित है।

नर और मादा. छठा. और सातवां.

अपने अस्तित्व की समग्रता में, हम ईश्वर की छवि बनाते हैं। मुझे इन पर एक-एक करके ध्यानपूर्वक काम करना चाहिए। हमने पूरी मेहनत कर ली है।

अब संश्लेषण का समय आ गया है, जो निश्चित रूप से एक ऐसी चीज़ है जो व्यवस्थित धर्मशास्त्र को करनी चाहिए। सबसे पहले, छवि के मूल, कार्यात्मक और संबंधपरक पहलू हैं। इन्हें एक साथ रखा जाना चाहिए।

क्या आपको याद है जब मैंने ऐतिहासिक धर्मशास्त्र का एक छोटा सा, बहुत संक्षिप्त सर्वेक्षण किया था जिसमें इन तीन अवधारणाओं का परिचय दिया गया था? थॉमस, एक्विनास ने मूल या संरचनात्मक के लिए, वर्दुन ने कार्यात्मक के लिए, और ब्रूनर ने संबंधपरक के लिए। मैंने कहा, अंततः, हम इन तीनों को एक साथ रखने की कोशिश करने जा रहे हैं।

मैं मिलार्ड एरिक्सन के *ईसाई धर्मशास्त्र के पृष्ठ 513 पर दिए गए कथन से सहमत हूँ*, "छवि को मुख्य रूप से सारगर्भित या संरचनात्मक रूप में माना जाना चाहिए। छवि मनुष्य के स्वभाव में ही है, जिस तरह से उसे बनाया गया है।" मैं कुलुस्सियों 3:9, और 10, और इफिसियों 4:22 से 24 के पॉलिन ग्रंथों की हमारी व्याख्या के आधार पर इस निष्कर्ष से सहमत हूँ।

वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ फेथ, अध्याय 4, पैराग्राफ 2, बड़ा कैटेचिज्म नंबर 17, छोटा कैटेचिज्म 10, बिरखाँफ सिस्टमैटिक थियोलॉजी, पृष्ठ 204 की तुलना करें। हालाँकि, एरिक्सन मूल पहलू पर अत्यधिक जोर देता है। आंशिक रूप से, यह उनके अच्छे इरादों के बावजूद, बाइबिल धर्मशास्त्र के फलों को अपने व्यवस्थित फॉर्मूलेशन में शामिल करने में उनकी विफलता के कारण है।

ईश्वर की छवि के बारे में उनका दृष्टिकोण होकेमा द्वारा दी गई छवि, ईश्वर की छवि में निर्मित उनकी पुस्तक, ईश्वर की छवि में निर्मित उनकी पुस्तक और रॉबर्ट न्यूमैन द्वारा दी गई सामग्री के प्रकार के उद्धारक-ऐतिहासिक चरणों को शामिल करके मजबूत होगा। होकेमा का यह कहना सही है कि शास्त्र में कार्यात्मक और संबंधपरक पहलू प्रमुख हैं। हालाँकि, वह मूल पहलू को कम महत्व देते हैं।

होकेमा अब, होकेमा, एरिक्सन ने मूल पहलू को बहुत बढ़ा दिया है। होकेमा सही है। यदि आप ग्रीसिस को गिनते हैं, तो छवि के संबंधपरक और कार्यात्मक पहलुओं के लिए और भी बहुत कुछ है, छवि के संबंधपरक और कार्यात्मक पहलुओं से संबंधित और भी छंद हैं।

हालाँकि, मेरे अनुमान में, होकेमा ने मूल पहलू को थोड़ा कम करके आंका है, थोड़ा ज़्यादा। एक संश्लेषण की आवश्यकता है। आदम और हव्वा को परमेश्वर की तरह बनाया गया था, क्योंकि उन्हें उसकी इच्छा पूरी करने के लिए ज्ञान दिया गया था।

वे अपने निर्माता की छवि में सच्ची धार्मिकता और पवित्रता में बनाए गए थे। इस प्रकार, मनुष्य के रूप में मनुष्य, एक मानव प्राणी के रूप में, परमेश्वर के विचारों को सोचने और उसकी इच्छा को पूरा करने में सक्षम है। मनुष्य के रूप में मनुष्य एक पवित्र प्राणी है जो अपने निर्माता के साथ संगति के लिए बनाया गया है।

यह छवि का मूल या संरचनात्मक पहलू है। बाइबल वास्तव में छवि के कार्यात्मक और संबंधपरक पहलुओं के बारे में भी अधिक बार बोलती है। आदम और हव्वा को परमेश्वर की बाकी सृष्टि पर प्रभुत्व दिया गया था।

उन्हें पृथ्वी पर छोटे-छोटे स्वामी बनकर अपने प्रभु का आदर्श प्रस्तुत करना था। उन्हें ईश्वर, अपने साथी मनुष्य और सृष्टि से ऐसे संबंध बनाने थे जो ईश्वर को प्रसन्न करें। न्यूमैन का योगदान बाइबिल के चित्र दिखाना है जो कार्यात्मक और संबंधपरक पहलुओं का वर्णन करते हैं।

मैं उनके नेतृत्व का अनुसरण करता हूँ और ईश्वर की छवि पर उनके निष्कर्षों को गुण और अभिव्यक्ति की तर्ज पर पारंपरिक मूल अवधारणा से जोड़ता हूँ। छवि पर मूल और संरचनात्मक जोर गुण हैं। छवि के कार्यात्मक और संबंधपरक दृष्टिकोण गुणों की अभिव्यक्ति की तरह हैं।

मैं संज्ञा और क्रिया की अवधारणा को जोड़ सकता हूँ। संज्ञा वास्तव में शब्दों पर एक नाटक है, क्योंकि भाषा विज्ञान में, हम संज्ञा में किसी स्थान पर कब्जा करने वाली किसी चीज़ को संज्ञा या सर्वनाम कहते हैं, और इसी तरह, यह संज्ञा है। इसलिए, संज्ञा की तरह संज्ञा का दृष्टिकोण है, और कार्यात्मक और संबंधपरक पहलू क्रियाओं की तरह हैं।

मनुष्य के रिश्तों और भूमिकाओं में छवि के बाइबिल चित्र उसके ईश्वर की समानता में बनाए जाने के परिणाम हैं। कुम्हार, माली, किसान, चरवाहा, राजा, प्रजा, माता-पिता, बच्चे और पति/पत्नी के रूप में ईश्वर ईश्वर की कुछ झलकियाँ दर्शाता है। न्यूमैन के निष्कर्ष को इस प्रकार संक्षेपित किया जा सकता है: मैं बाइबिल के चित्रों के बारे में बात करने जा रहा हूँ और फिर हम ईश्वर को कैसे प्रतिबिंबित करते हैं।

कुम्हार मनुष्य की बाइबिल की तस्वीर ईश्वर की रचना, योजना और संप्रभुता के प्रयोग में प्रतिबिंबित करती है। इसलिए एक कुम्हार थोड़ा बहुत जानता है कि ईश्वर की संप्रभुता के संदर्भ में ईश्वर होना कैसा होता है, और यह निश्चित रूप से एक बहुत ही सूक्ष्म जगत है, लेकिन फिर भी, बाइबिल के सादृश्य के कारण, उस मिट्टी के साथ काम करने वाला व्यक्ति नियंत्रण में है। इसी तरह, ईश्वर अपने संसार और अपने लोगों पर नियंत्रण रखता है।

बाइबिल में माली और किसान की जो तस्वीर दी गई है, उसमें मनुष्य ईश्वर की देखभाल, योजना, आशीर्वाद और न्याय में ईश्वर को दर्शाता है। खरपतवार निकालना और किसी को यह समझने में मदद करना कि ईश्वर का न्याय करना कैसा होता है। मेरा मतलब यह नहीं है कि यह मुझे हंसाता है, लेकिन यह तुच्छ लगता है, लेकिन मेरे लिए यह एक शक्तिशाली अवधारणा है कि हमारी सांसारिक गतिविधियाँ एक छोटे से तरीके से, इन समानताओं के कारण ईश्वर को प्रतिबिंबित करती हैं, लेकिन क्योंकि वह उन्हीं भूमिकाओं और संबंधों में उन्हीं के साथ खुद के बारे में बात करता है।

परमेश्वर एक चरवाहे के रूप में उन लोगों द्वारा प्रतिबिम्बित होता है जो उसकी छवि में बनाए गए हैं। हम उसके द्वारा अपने लोगों की खोज, मार्गदर्शन, पोषण, सुरक्षा और न्याय करने पर विचार करते हैं। राजा के रूप में परमेश्वर मनुष्यों द्वारा सम्मान, शासन, आशीर्वाद और न्याय के योग्य होने में प्रतिबिम्बित होता है।

एक माता-पिता के रूप में ईश्वर अपने बच्चों को जन्म देने, उन्हें पालने और उन्हें अनुशासित करने में ईश्वर को दर्शाता है। पति के रूप में, हम एक रिश्ते में प्रवेश करने, अधिकार का प्रयोग करने, आनंद लेने, प्यार करने, अंतरंगता साझा करने और निष्ठा में ईश्वर को दर्शाते हैं। मैं यह भी जोड़ना चाहूँगा कि रॉबर्ट न्यूमैन आजीवन अविवाहित हैं।

सामाजिकता की अपनी आवश्यकता को समझते हुए, जो कि उनके स्वाभाविक स्वभाव के विपरीत था, जो कि लाइब्रेरी के कोने में जाकर सारा दिन पढ़ना था। उन्होंने जानबूझकर एक घर

खरीदा और पुरुष छात्रों को अपने साथ रहने दिया। घर के प्रत्येक सदस्य की ज़िम्मेदारी में से एक सप्ताह में एक बार भोजन पकाना था।

इसलिए, उन्होंने खुद को इस सामाजिक स्थिति में आने के लिए मजबूर किया, और मैं इसके लिए उनकी सराहना करता हूँ। निश्चित रूप से, इसने उन्हें एक बेहतर इंसान, ईश्वर का बच्चा और निश्चित रूप से एक बेहतर प्रोफेसर बनाया। संश्लेषण और निष्कर्ष के माध्यम से छवि पर एक और महत्वपूर्ण दृष्टिकोण यह है कि यीशु मसीह ईश्वर की पूर्ण छवि है।

इसलिए, क्राइस्टोलॉजी बाइबल के अनुसार मानवशास्त्र से संबंधित है। वह उद्धार पाने वालों के लिए अंतिम मॉडल और युगांतशास्त्रीय लक्ष्य दोनों है। यीशु मूल रूप से परमेश्वर की छवि है, और अपने अवतार में, वह उस छवि को पूरी तरह से प्रकट करता है।

एरिकसन हमें सही दिशा में ले जाते हैं जब वे सारांश देते हैं, "यीशु का पिता के साथ पूर्ण संगति थी। यीशु ने पिता की इच्छा का पूरी तरह से पालन किया, और यीशु ने हमेशा मनुष्यों के लिए एक मजबूत प्रेम प्रदर्शित किया।" एरिकसन के *ईसाई धर्मशास्त्र के पृष्ठ 5, 14, और 15*।

ईश्वर हमें यीशु की तरह जीने में मदद करें। वह सबसे पहले उदाहरण नहीं है। वह सबसे पहले प्रभु और उद्धारकर्ता है, लेकिन वह हमारा उदाहरण है।

नया नियम, बाइबल स्पष्ट रूप से उसे उस भूमिका में प्रस्तुत करती है। यीशु न केवल एक आदर्श है बल्कि उसका लक्ष्य भी है। विश्वासी एक दिन यीशु की छवि के अनुरूप हो जाएँगे जब वे अमरता और महिमा को धारण करेंगे।

इससे हमें उम्मीद मिलनी चाहिए और हमें हार न मानने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। मनुष्य में ईश्वर की छवि पर तीसरा दृष्टिकोण होकेमा है, जो हमें इमागो देई के सिद्धांत की हमारी प्रस्तुति में मुक्ति-ऐतिहासिक दृष्टिकोण को शामिल करना सिखा रहा है। मनुष्य को पतन के बाद सृष्टि में इन मुक्तिदायी ऐतिहासिक चरणों में देखा जाना चाहिए और छवि विकृत हो जाती है; पतन के बाद और छवि को मसीह में नवीनीकृत किया जा रहा है, और छवि केवल शाश्वत अवस्था में ही पूर्ण होगी।

हमारे बारे में परमेश्वर की सच्चाई है, इसलिए हमें लोगों की प्रभावी ढंग से सेवा करने के लिए इन शब्दों में सोचना चाहिए। मुझे लगता है कि चार गुना मुक्तिदायक ऐतिहासिक ग्रिड, सृजन, पतन, मुक्ति और पूर्णता, कई, कई बाइबिल सिद्धांतों और अवधारणाओं के माध्यम से सोचने के लिए बहुत मददगार है।

चौथा, होकेमा सटीक रूप से कहता है कि छवि में तीन रिश्तों में मानव प्राणी शामिल हैं: भगवान के साथ, साथी मनुष्यों के साथ, और सृष्टि के साथ।

हम न्यूमैन के अध्ययन और सुसमाचारों में परमेश्वर की आदर्श छवि, यीशु के जीवन की जांच से उसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। परमेश्वर की सक्षम कृपा से हमें इनमें से प्रत्येक क्षेत्र में छवि के प्रति

अपने प्रतिबिंब में वृद्धि करनी चाहिए। जैसा कि हम देखेंगे, अगले तीन दृष्टिकोण वास्तव में अलग-अलग नहीं हैं।

छुड़ाए गए मानवता का कुल योग छवि के संबंधपरक पहलू की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति है। 1 कुरिन्थियों 12, इफिसियों 4 जैसे आध्यात्मिक उपहार अंशों पर विचार करें, और प्रकाशितवाक्य 5 पर भी विचार करें, जो हर जनजाति, भाषा, लोगों और राष्ट्र के नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में एक छुड़ाए गए मानवता में एकजुट होने की बात करता है। इसलिए, हमें अपने आप को छुड़ाए गए मानवता के कुल योग के लिए खोलना चाहिए क्योंकि यह हमारे तीन रिश्तों, इमागो देई के संबंधपरक पहलू का सबसे बड़ा उदाहरण और अभिव्यक्ति है।

मनुष्य का नर या मादा होना इस संबंधपरक पहलू की एक और अभिव्यक्ति है। उत्पत्ति 1 को याद करें, और परमेश्वर ने उन्हें अपनी छवि में बनाया, नर और मादा उसने उन्हें बनाया। अंत में, हुकुम का दावा है कि मनुष्य अपने अस्तित्व की संपूर्णता में परमेश्वर की छवि में बनाया गया था।

यानी हम शरीर के बारे में बात कर रहे हैं। बिरखॉफ कहते हैं, उद्धरण, हमें शरीर के भौतिक पदार्थ में छवि की तलाश करने की ज़रूरत नहीं है। यह आत्मा की आत्म-अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त साधन के रूप में शरीर में पाया जाता है।

उद्धरण बंद करें, पृष्ठ 205. तो, मुझे लगता है कि यह ठीक कहा गया है। जैसा कि मैंने पहले कहा, हम मानवीय हाथों, चेहरे, शरीर, एक मानव प्राणी द्वारा हमारी सेवा करने, हमसे प्रेम करने, हमें सुधारने, जो कुछ भी किया जा रहा है, के अलावा ईश्वर की छवि का अनुभव नहीं कर सकते।

मुझे कहना चाहिए कि यही एकमात्र तरीका है जिससे हम इसका अनुभव करते हैं। हम इसका अनुभव शरीर के बिना, भौतिकीकरण के बिना नहीं कर सकते; मनुष्य अपने शरीर में इस तरह से हमसे संबंध रखते हैं। मैंने शुरू से ही मानवता के सिद्धांत से संबंधित तीन बड़े विषयों पर बात की।

पहला, मनुष्य का सृजन किया जाना। दूसरा और सबसे लंबा पहलू, जिसे हमने अभी समाप्त किया है, वह है मानवजाति में ईश्वर की छवि। धर्मशास्त्रीय नृविज्ञान के अंतर्गत आने वाला तीसरा और अंतिम पहलू, मनुष्य का सिद्धांत, मनुष्य की संवैधानिक प्रकृति है।

हम बाइबल के विभिन्न दृष्टिकोणों का सर्वेक्षण करना चाहते हैं, बाइबल के डेटा की जांच करना चाहते हैं, मध्यवर्ती राज्य मार्ग और त्रिकोटोमिस्ट प्रमाण ग्रंथों दोनों की। हम त्रिकोटोमी के लिए समस्याग्रस्त कुछ मार्ग देखना चाहते हैं और फिर मनुष्य की संवैधानिक प्रकृति पर निष्कर्ष निकालना चाहते हैं। सबसे पहले, हमारे मेकअप, हमारी संवैधानिक प्रकृति पर विभिन्न विचारों का सर्वेक्षण।

ये चार दृष्टिकोण हैं, वास्तव में तीन अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। चौथा दृष्टिकोण दूसरे दृष्टिकोण से अलग है। अद्वैतवाद, द्वैतवाद, त्रिगुणवाद, सशर्त एकता, मनोदैहिक एकता, या समग्र द्वैतवाद।

अद्वैतवाद, उदाहरणों में एंग्लिकन चर्च के बिशप जेएटी रॉबिन्सन और डीआरजी ओवेन शामिल हैं। यह दृष्टिकोण मानता है कि मनुष्य अविभाज्य हैं। मनुष्य के विभिन्न भाग जिनके बारे में शास्त्र में बताया गया है, वे हमारे अस्तित्व की समग्रता को संदर्भित करने के विभिन्न तरीके हैं।

अद्वैतवाद के अनुसार, मनुष्य होने के लिए शरीर का होना आवश्यक है। इस प्रकार, एक मध्यवर्ती अवस्था में एक देहरहित अस्तित्व को नकार दिया जाता है। हम देखेंगे कि बाइबल, बाइबल का मुख्य जोर शरीर के पुनरुत्थान पर नहीं है, बल्कि बाइबल एक मध्यवर्ती अवस्था में देहरहित अस्तित्व की शिक्षा देती है और इस प्रकार अद्वैतवाद गलत है।

अब, मुझे कहना चाहिए, आधुनिक दर्शन और विज्ञान के लिए निश्चित रूप से अद्वैतवाद प्रमुख दृष्टिकोण है। इसमें कोई संदेह नहीं है। और धर्मशास्त्री सहमत हैं, उदारवादी विचारधारा के लोग सहमत हैं, और यहाँ तक कि कई इंजीलवादी भी इस अद्वैतवादी मानवशास्त्र के आगे झुक रहे हैं, और मैं शास्त्र के आधार पर सम्मानपूर्वक असहमत हूँ, जैसा कि हम देखेंगे।

डाइकोटॉमी, चार्ल्स हॉज, लुइस बर्कहोफ । यह दृष्टिकोण मानता है कि मनुष्य दो भागों, दो संस्थाओं और दो घटकों से बना है। एक, भौतिक भाग, शरीर, और दो, अभौतिक भाग, आत्मा या भावना।

ट्राइकोटॉमी, फ्रांज डेलिट्ज़ इसका एक उदाहरण है। आज ऐसे धर्मशास्त्रियों के उदाहरण खोजना वास्तव में कठिन है जो इस बात की पुष्टि करते हैं। यह दृष्टिकोण मानता है कि मनुष्य तीन भागों से बना है।

एक, भौतिक शरीर। दो, आत्मा जो “मनुष्य के स्नेह, इच्छाओं, भावनाओं और इच्छा का केंद्र है।” न्यू स्कॉफील्ड रेफरेंस बाइबल, पृष्ठ 1293, नोट दो।

1 थिस्सलुनीकियों 5:23 पर। आत्मा स्नेह, इच्छाओं, भावनाओं और इच्छा का स्थान है। तीन, एक आत्मा।

इसका मतलब सिर्फ यह नहीं है कि आत्मा और आत्मा को कभी-कभी विपरीत माना जाता है, शास्त्रों में या बेहतर शब्दों में अलग-अलग माना जाता है, बल्कि यह भी है कि वे अलग-अलग भाग हैं, अलग-अलग संस्थाएँ हैं। वे ऑन्टोलॉजिकल रूप से अलग हैं। एक आत्मा जो ईश्वर की चेतना और ईश्वर के साथ संचार करने में सक्षम है, उद्धरण बंद करें।

क्षमा करें। त्रिविमीयता के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण पाठ 1 थिस्सलुनीकियों 5, 23 और इब्रानियों 4, 12 हैं, जिन दोनों की हम जाँच करेंगे। सशर्त एकता एरिक्सन का शब्द है।

साइकोसोमैटिक यूनिटी होकेमा का शब्द है। होलिस्टिक द्वैतवाद जॉन कूपर का शब्द है, जिन्होंने बॉडी, सोल, एंड लाइफ एवरलास्टिंग नामक एक महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी है। ये तीनों व्यक्ति, एरिक्सन, होकेमा और कूपर, द्वैतवाद के अधिक आधुनिक रूप को मानते हैं।

वे कहते हैं कि यह सच है कि एक मध्यवर्ती अवस्था होती है जिसमें मनुष्य का आध्यात्मिक भाग शरीर से अलग हो जाता है। लेकिन वे कहते हैं कि केवल इतना कहना ही पर्याप्त नहीं है। यह दृष्टिकोण मानता है कि मनुष्य की सामान्य अवस्था एक भौतिक, एकात्मक प्राणी के रूप में होती है।

एरिक्सन 537. यह एकता मृत्यु के समय बदल जाती है, जहाँ मनुष्य का अभौतिक भाग जीवित रहता है जबकि भौतिक भाग विघटित हो जाता है। हालाँकि, यह अशरीरी मध्यवर्ती अवस्था अधूरी या असामान्य है।

भविष्य में मृतकों के पुनरुत्थान में, व्यक्ति फिर से एकीकृत हो जाएगा। तो, क्या चार अलग-अलग दृष्टिकोण हैं? वास्तव में नहीं। अद्वैतवाद, द्वैतवाद, त्रिविमवाद।

यह सशर्त एकता या समग्र द्वैतवाद एक प्रकार का द्वंद्व है जो कहता है कि हम बनाए गए थे; आदम और हव्वा को शरीर और आत्मा के साथ समग्र मानव के रूप में बनाया गया था। हम अभी इसी तरह जीते हैं, और इसी तरह हम नई धरती पर पुनर्जीवित प्राणियों के रूप में हमेशा के लिए जीएँगे। एक मध्यवर्ती अवस्था है। हालाँकि, बाइबल की पूरी कहानी के प्रकाश में, वह मध्यवर्ती अस्तित्व असामान्य और अस्थायी है।

इसलिए, एकत्ववाद की तरह, यह सशर्त एकता मानव की एकता पर जोर देती है, लेकिन यह उस एकता को निरपेक्ष नहीं बनाती है और स्वीकार करती है कि हम दो भागों में से हैं, और फिर भी वे दो भाग सामान्य रूप से एकीकृत हैं। कुछ बाइबिल डेटा की जाँच करें। ऐसे अंश हैं जो एक मध्यवर्ती अवस्था सिखाते हैं।

लूका 23:43. जो अपराधी लटकाए गए थे, उनमें से एक ने यीशु की निन्दा करके कहा, "क्या तू मसीह नहीं है? अपने आप को और हमें बचा।" परन्तु दूसरे ने उसे डाँटकर कहा, "क्या तू परमेश्वर से नहीं डरता? क्योंकि तू और हम दोनों ही न्याय के योग्य ठहरे हैं, क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं, पर इस मनुष्य ने कोई अनुचित काम नहीं किया।"

और उसने कहा, यीशु, जब तू अपने राज्य में आए तो मुझे याद रखना। और उसने उससे कहा, मैं तुझसे सच कहता हूँ, आज तू मेरे साथ स्वर्ग में होगा। यहाँ, ल्यूक मरते हुए चोर से वादा करता है, मैं आज तुझसे सच कहता हूँ, तू मेरे साथ स्वर्ग में होगा।

मैं अभी भी उस व्याख्या से सहमत नहीं हूँ जो इस दिन को अंतिम दिन या ऐसा ही कुछ समझती है। पाठ सिखाता है कि माफ़ किया गया चोर उस दिन बाद में परमेश्वर की उपस्थिति में यीशु से मिल जाएगा। चूँकि उनके शरीर क्रूस पर ही रहे और उन्हें नीचे उतारकर दफना दिया गया, इसलिए मानव स्वभाव का कोई अमूर्त हिस्सा अवश्य होगा जो मृत्यु के बाद भी जीवित रहता है।

मैं हॉवर्ड मार्शल, ल्यूक पर न्यू इंटरनेशनल ग्रीक टेस्टामेंट कमेंट्री, कहता हूँ, उद्धरण, यीशु का उत्तर उसे, विश्वास करने वाले चोर को, स्वर्ग में तत्काल प्रवेश का आश्वासन देता है। उद्धरण बंद करें। चोर की यात्रा मसीह से मेल खाती है, जो पिता से आपके हाथों में प्रार्थना करता है।

मैं अपनी आत्मा को श्लोक 43 सौंपता हूँ। मैं एक व्याख्या को भी अस्वीकार करता हूँ, जो एक अल्पविराम के रचनात्मक आंदोलन द्वारा, इस व्यवसाय को दूर करने की कोशिश करता है। मैं आज तुमसे सच कहता हूँ, अल्पविराम भविष्य में किसी अज्ञात समय पर, तुम मेरे साथ स्वर्ग में होगे।

यह पाठ को पढ़ने का सामान्य तरीका नहीं है। जैसा कि लूका की टिप्पणियों से पता चलता है। फिलिप्पियों 123 एक और मार्ग है जो मध्यवर्ती अवस्था की पुष्टि करता है।

यहाँ पौलुस मसीह के पास जाने और उसके साथ रहने की इच्छा व्यक्त करता है। मुझे संदर्भ पढ़ने की ज़रूरत है। फिलिप्पियों एक।

पॉल कहते हैं, हाँ, और मैं आनन्दित होऊँगा फिलिप्पियों 1:19 क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारी प्रार्थनाओं और यीशु मसीह की आत्मा की सहायता से, यह मेरे छुटकारे से होगा। उसका मतलब है जेल से, क्योंकि यह मेरी उत्सुकता और आशा है कि मैं बिल्कुल भी शर्मिंदा नहीं होऊँगा बल्कि पूरे साहस के साथ रहूँगा। अब, हमेशा की तरह, मसीह मेरे शरीर में सम्मानित होगा, चाहे जीवन से या मृत्यु से।

क्योंकि मेरे लिए जीना मसीह है और मरना लाभ है। अगर मुझे देह में जीना है, तो इसका मतलब है कि मेरे लिए फलदायी श्रम। फिर भी मैं क्या चुनूँगा, यह मैं नहीं बता सकता।

मैं दोनों के बीच में उलझा हुआ हूँ। मेरी इच्छा है कि मैं कूच करके मसीह के पास चला जाऊँ, क्योंकि यह कहीं बेहतर है, लेकिन तुम्हारे लिए शरीर में रहना ज़्यादा ज़रूरी है। इस बात का भरोसा रखते हुए, मैं जानता हूँ कि मैं तुम्हारे साथ रहूँगा और तुम्हारे विश्वास में प्रगति और आनन्द के लिए तुम्हारे साथ रहूँगा ताकि मेरे फिर से तुम्हारे पास आने के कारण मसीह यीशु में तुम्हारे पास गर्व करने का भरपूर कारण हो।

यहाँ पौलुस मसीह के साथ रहने और विदा होने की अपनी इच्छा व्यक्त करता है। संदर्भ में, वह मृत्यु पर शरीर को निर्वासित करने की बात कर रहा है क्योंकि 1 आयत 21 में जीने और मरने के बीच अंतर बताया गया है। 2 आयत 22 में शरीर में निरंतर रहने की बात कही गई है, और 3 आयत 24 में भी शरीर में बने रहने की बात कही गई है।

पौलुस को उम्मीद थी कि जब वह मरेगा तो वह मसीह की उपस्थिति में जाएगा। उसका शरीर सड़ते हुए दफ़न हो जाएगा। उसका अमूर्त हिस्सा प्रभु के पास चला जाएगा।

ध्यान दें कि धर्मग्रंथ में आत्मा और कभी-कभी आत्मा का उल्लेख मानव स्वभाव के हमारे मध्यवर्ती पहलू और मानव स्वभाव के उस हिस्से के लिए किया गया है जो मृत्यु के बाद भी जीवित रहता है, लेकिन यह आमतौर पर इसे अलग तरीके से करता है। आमतौर पर, यह व्यक्तिगत सर्वनामों का उपयोग करता है। आज, तुम, यीशु ने मरते हुए चोर से कहा, मेरे साथ स्वर्ग में रहोगे।

फिलिप्पियों 1, मैं विदा होकर मसीह के साथ रहना चाहता हूँ, जो कहीं बेहतर है, जो मुझे याद दिलाता है कि ईसाई धर्मशास्त्र शरीर में वर्तमान अवस्था, मृत्यु के बाद और पुनरुत्थान से पहले की मध्यवर्ती अवस्था और अंतिम अवस्था, जो मृतकों के पुनरुत्थान के बाद होती है, के बीच अंतर करता है। यदि मध्यवर्ती अवस्था बेहतर है, तो वर्तमान अवस्था अच्छी है। शरीर में जीवित रहना और मसीह को जानना अच्छा है।

मैं सुझाव दूंगा कि दो कारणों से, जिस पर मैं थोड़ी देर में फिर से चर्चा करूंगा, शरीर से दूर रहना और प्रभु के साथ उपस्थित रहना बेहतर है। यह सबसे अच्छा, अच्छा, बेहतर, सबसे अच्छा, सकारात्मक, तुलनात्मक और विशेषणों की अतिशयोक्तिपूर्ण डिग्री है। मृतकों में से महिमामय शरीर में और हमेशा के लिए प्रभु के साथ जी उठना सबसे अच्छा है।

दुनिया में दो कारणों से, अस्थायी और अपूर्ण अवस्था में, अपने शरीर से बाहर रहना कैसे बेहतर हो सकता है। पहला, सारा पाप चला गया है। इब्रानियों 12:23 सिद्ध किए गए धर्मी पुरुषों की आत्माओं के बारे में बात करता है।

मरना पाप रहित होना है, और मसीह में मरना पाप रहित होना है। लेकिन मुख्य कारण, और यह इन मध्यवर्ती अवस्थाओं में से लगभग हर एक में आता है, यह है कि मध्यवर्ती अवस्था विश्वासियों के लिए अब शरीर में प्रभु को जानने से बेहतर है क्योंकि व्यक्ति मसीह की तत्काल उपस्थिति में चला जाता है। आज तुम मेरे साथ स्वर्ग में रहोगे, यीशु ने मरते हुए चोर से कहा।

मैं इस शरीर को छोड़कर मसीह के साथ रहना चाहता हूँ, और इस जीवन में, मसीह के साथ रहना चाहता हूँ, जो कि कहीं बेहतर है। 2 कुरिन्थियों 5, शरीर से अनुपस्थित होना प्रभु के साथ उपस्थित होना है। बेशक, इसका अर्थ यीशु है। 2 कुरिन्थियों 5, 6, और 8। इसलिए हम हमेशा अच्छे साहस के साथ रहते हैं, श्लोक 6, हम जानते हैं कि जब तक हम शरीर में घर पर हैं, हम प्रभु से दूर हैं, क्योंकि हम विश्वास से चलते हैं, न कि दृष्टि से।

हाँ, हम अच्छे साहसी हैं, और हम शरीर से दूर होकर प्रभु के साथ घर में रहना पसंद करेंगे। इसलिए, चाहे हम घर पर हों या बाहर, हम सभी को मसीह की न्यायपीठ के सामने उपस्थित होना चाहिए, ताकि प्रत्येक व्यक्ति को उसके द्वारा शरीर में किए गए अच्छे या बुरे कामों के लिए उसका हक मिले। 2 कुरिन्थियों 5, 6, और 8, हमारा तीसरा और अंतिम मध्यवर्ती अवस्था मार्ग, यहाँ शरीर में घर पर होना और प्रभु से दूर होना, पौलुस द्वारा शरीर से दूर होने और प्रभु के साथ घर में रहने के साथ तुलना की गई है।

यहाँ यह पूर्वकल्पित है कि मानव स्वभाव भौतिक और अभौतिक पहलुओं से बना है। जब कोई व्यक्ति शरीर में घर पर होता है, पृथ्वी पर शरीर में रहता है, तो वह स्वर्ग में मसीह की उपस्थिति में नहीं होता है। जब कोई विश्वासी शरीर छोड़ता है, तो वह प्रभु के पास चला जाता है।

स्पष्ट रूप से, वह जिस शरीर को छोड़ता है वह मसीह की उपस्थिति में नहीं जाता है। एक अभौतिक हिस्सा है जो शरीर की मृत्यु के बाद बच जाता है और प्रभु की उपस्थिति में प्रवेश करता है। मध्यवर्ती राज्य ग्रंथों के बारे में निष्कर्ष।

हमने जिन अंशों का संक्षेप में सर्वेक्षण किया है, वे ऊपर दिए गए एकात्मक दृष्टिकोण का पर्याप्त रूप से खंडन करते हैं। यह बिलकुल सच नहीं है कि मनुष्य की प्रकृति इतनी एकता है कि उसका देह-रहित अस्तित्व असंभव है। यह संभव है और मध्यवर्ती अवस्था में वास्तविक बन जाता है।

धनवान व्यक्ति और लाजर का दृष्टांत मृत्यु के बाद बचाए गए और बचाए नहीं गए लोगों के देह रहित अस्तित्व की वास्तविकता सिखाता है। दूसरा स्थान जो ऐसा करता है वह है 2 पतरस 2:19। यह एक गलत छपाई है।

मैंने सोचा कि यह था। यह 2 पतरस 2:9 है। 2 पतरस 2:9, 19 नहीं। फिर भी मैं बल महसूस करता हूँ, इसलिए मैं एक मध्यवर्ती स्थिति की पुष्टि करता हूँ।

फिर भी मुझे एरिक्सन द्वारा मध्यवर्ती अवस्था को अपूर्ण या असामान्य कहने की बात पर बल महसूस होता है। मैं सहमत हूँ। हमारी अंतिम अवस्था एक असंबद्ध अस्तित्व नहीं है, जो कई इंजील ईसाइयों की राय के विपरीत है।

हम यही करते हैं। हम सही कहते हैं कि शरीर से अलग होना प्रभु के साथ उपस्थित होना है। और फिर हम हमेशा के लिए इसका अनुमान लगाते हैं, यह भूल जाते हैं कि हम शरीर के पुनरुत्थान में भी विश्वास करते हैं।

यह हमारे मन में व्यवस्थित धर्मशास्त्र की विफलता है। हमारी अंतिम अवस्था नई पृथ्वी पर महिमामय शरीर में होगी। उस अर्थ में, मध्यवर्ती अवस्था, मध्यवर्ती देह रहित आध्यात्मिक अस्तित्व, अस्थायी और अपूर्ण है।

विचार करने के लिए अन्य अंश हैं प्रकाशितवाक्य 6:9, और 10, जहाँ वेदी के नीचे आत्माएँ प्रतिशोध के लिए चिल्लाती हैं। वे शहीद हो गए। वे मर चुके हैं।

वे देहधारी नहीं हैं क्योंकि वे अभी तक जीवित नहीं हुए हैं, और फिर भी वे न्याय के लिए रो रहे हैं। प्रेरितों के काम 7.59. स्टीफन की तरह लगता है। जब वे स्टीफन को पत्थर मार रहे थे, तो उसने पुकारा, प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण करें।

ऐसा लगता है कि उसका शरीर स्वर्ग में यीशु की उपस्थिति में तुरंत नहीं गया। उसके शरीर को पत्थर मारकर मार डाला गया, लेकिन उसने यीशु से अपनी आत्मा प्राप्त करने के लिए कहा। इसी तरह, इब्रानियों 12:23, जिसे मैंने पहले उद्धृत किया था, मध्यवर्ती अवस्था में मृत्यु के बाद सिद्ध किए गए धर्मी पुरुषों की आत्माओं के बारे में बात करता है।

हमारे अगले व्याख्यान में, मैं कहना चाहूँगा कि हम त्रिकोटोमस प्रमाण पाठ में से दो पर चर्चा करेंगे। 1 थिस्सलुनीकियों 5:23, इब्रानियों 4:12। इन पाठों के बिना, कोई त्रिकोटोमस नहीं होगा, इसलिए उन पर गौर करना महत्वपूर्ण है।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 7 है, ईश्वर की छवि। रॉबर्ट सी. न्यूमैन, संश्लेषण, मानवता का संविधान।